International Journal of Information Movement Vol.2 Issue XI March 2018)
IFSIJ Impact Factor : 1.575 Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 176-182

माध्यमिक विद्यालय स्तर पर दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. भाबाग्राही प्रधान
शोध निर्देशक (शिक्षा विभाग),
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनू (नागौर) राज0

सुरेन्द्र कुमार
शोधार्थी (शिक्षा विभाग),
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनू (नागौर) राज0

1.0 प्रस्तावना :– कुछ बालक सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक आदि रुपों में अलग होते है ये विशिष्ट बालक कहलाते है। ये सामान्य बालकों की तरह सामान्य शिक्षा व्यवस्था में समायोजित नही हो पाते है। शारीरिक रुप से कुछ कमी वाले व्यक्तियों में विशेष क्षमताएँ होने और सरकार द्वारा ऐसे लोगों के लिए विकलांग की बजाय **'दिव्यांग'** शब्द का प्रयोग सुझाया है। 'मन की बात' कार्यक्रम में अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि परमात्मा ने जिसको शरीर में कोई कमी दी है, कोई क्षति दी है, एक आध अंग काम नही कर रहा है, हम उसे विकलांग कहते है और विकलांग के रुप में जानते है। लेकिन उनके परिचय में आते है तो पता चलता है कि हमें अपनी ऑखों से उनमें एक कमी दिखती है, लेकिन ईश्वर ने उनकों कोई अतिरिक्त ताकत दी होती है, उन्होनें कहा, फिर मेरे मन में विचार आया कि ऑखों से तो हमें लगता है कि शायद वो विकलांग है, लेकिन अनुभव से लगता है कि उसके पास कोई अतिरिक्त शक्ति है और तब जाकर के मेरे मन में विचार आया क्यों न हम हमारे देश में विकलांग की जगह पर दिव्यांग शब्द का उपयोग करें मोदी ने कहा कि हमने सुगम्य भारत अभियान की शुरुआत की है। इसके तहत हम भौतिक और आभासी दोनों तरह की आधारभूत संरचना में सुधार करके उन्हें **दिव्यांग** लोगों के लिए सुगम्य बनायेगें।

दिव्यांगव्स्था में अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का विशेष महत्व इसलिए भी है क्योंकि औद्योगिकृत समाज सहयोग एवं पारस्परिक संबंधों से अधिक अध्ययन आदतों,सृजनशीलता एवं समायोजन पर अधिक बल देता है। बचपन से ही बालक की आदतों के संबंध में परखा जाता है। समकालिक समाज में अन्य व्यक्त्वों के समक्ष अपनी वैयक्तिक पहचान और छवि बनाने के लिए दो बाते प्रमुख है पहली उसके द्वारा ग्रहण की गई शिक्षा तथा दूसरी उसके द्वारा प्राप्त की गई व्यवसायिक प्रस्थिति यह दोनों ही उसकी आदत के सूचक है।

वर्तमान समाज में शिक्षा की प्रकृति तथा कार्य में परिवर्तन बहुत तीव्र गति से हो रहे है।वर्तमान समय में सभी समाजों में दिव्यांग बालकों की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। क्योंकि तेजी से बदल रहे व्यवसायिक क्षेत्र में सामान्य पाठ्यचर्या के क्षेत्रों को पीछे छोड़ दिया है।

वर्तमान समय में समाज के दिव्यांग बालकों की शिक्षा का सिलसिला जारी है, जिससे वे अध्ययन आदतों,सृजनशीलता व समायोजन ये तीनों व्यक्ति के आरम्भ से लेकर आजीवन चलते रहते है। श्रम एवं व्यवसायिक योग्यता व्यक्ति के मूल्यों,आत्म सम्मान तथा विश्लेषण में सहायक होते है।

2.0 शोध सम्बंधित साहित्य का अध्ययन :–संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में अनुसंधानकर्ता की अस्वीकृत अमान्य विषयों एवं अध्ययन निरर्थक प्रयासों तथा पुनरावृति से रक्षा करता है। जहॉ तक ओर साहित्य का सिंहावलोकन अनुसंधान कर्ता में समस्या तक विषय के प्रति महत्ती विवेक शक्ति विकसित करती है, वही यह तुलनात्मक प्रदत भी प्रदान करता है जिनके आधार पर अनुसंधानकर्ता अपने निष्कर्षों की सार्थकता का मूल्याकंन तथा व्याख्या करता है।

3.0 समस्या का औचित्य :– शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य सीकर जिले में करने का विचार इसलिए किया गया क्योंकि यह वर्तमान में शिक्षा नगरी है। यहॉ राज्य के विभिन्न जिलों से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते है। सीकर जिले के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य बालकों एवं दिव्यांग बालकों की अध्ययन, आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन में क्या अन्तर पाया जाता है। माध्यमिक स्तर के कक्षा 10 के दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन को ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता के द्वारा प्रस्तुत शोधकार्य माध्यमिक स्तर की कक्षा नवमी एवं दसवीं का चयन किया गया है।

अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन से संबंधित पृथक पृथक अनेकों अनुसंधान कार्य किये जा चुके है। परन्तु यह सभी चर एक साथ दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को किस प्रकार प्रभावित करते है। इस संबंध में किये गये अध्ययनों का अभाव है। अतः दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययन उनकी अध्ययन आदतों के संदर्भ में करने की आवश्यकता को बल मिला है।

किसी भी कार्य को करने से पहले उसका औचित्य ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है। कार्य व कारण एक दूसरे के पूरक होते है। शैक्षिक क्षैत्र में जब भी कोई अनुसंधान कार्य किया जाता है। तो उस अध्ययन की उपादेयता,महत्व,प्रकृति आदि का औचित्य स्पष्ट करना इसलिए आवश्यक होता है कि हम इसके द्वारा यह सिद्ध कर सके इस अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत् को किस प्रकार प्रभावित करेंगें तथ इसके अतिरिक्त यह समस्या शैक्षिक समाज की उपादेयता सिद्ध करने में भी सहायक होती है।

प्रस्तुत अध्ययन इस सैद्धान्तिक अवधारणा पर आधारित है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का उनपर निश्चित रुप से सार्थक प्रभाव पड़ता है। तथा यह उनके भवि य को निर्धारित करनें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है दिव्यांगवस्थसा मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण दुःखद अवस्था है। इस स्तर पर विद्यार्थी विभिन्न विषय लेकर शैक्षिक एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में प्रवेश एवं प्रगति का आधार सृजनात्मकता अध्ययन आदतों तथा समायोजन का पता लगाकर उसका संबंध ज्ञात करने हेतु इस विषय का चयन किया गया है। अतः शोधकर्त्ता के संदर्भ में अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययन करना।

4.0 शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषिकरण :–

1. **दिव्यांग** :– किसी व्यक्ति के लिए कोई गतिविधि को करने के सामान्य तरीके या क्षमता से कम हो, यह आंकलन प्रायः व्यक्ति के अपने स्तर से ही किया जाता है।

2. **दिव्यांगता** :– किसी व्यक्ति के कार्य करने की क्षमता के परिणामों की ओर इंगित करती है जैसे कि ऑखों की रेटीना की क्षति के कारण व्यक्ति उन कार्यों को नहीं कर पाएगा जिसमें दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है।
3. **बाधा** :– जो उसे सामान्य कार्य करने से रोकती है या उसकी क्षमताओं को सीमित करती है।
4. **हानि या क्षति** :– ICIDH के अनुसार हानि का अर्थ किसी भी मनोवैज्ञानिक, शारीरिक या शरीर संरचनात्मक कार्यो की क्षति या असामान्यता है।

5.0 दिव्यांगता के प्रकारः– दिव्यांगता तीन प्रकार की होती है।

1. शारीरिक दिव्यांगता
2. मानसिक दिव्यांगता
3. दृष्टि–श्रृव्य दिव्यांगता

दिव्यांगता के विभिन्न प्रकार निम्न है–

1. लूले – लगड़ें, हथकटे
2. एक या इससे अधिक अंगों में लकवा
3. पॉवफिरा
4. मेरुदण्ड का वक्र
5. प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात
6. विकृत नितम्ब
7. मेरुदण्डीय द्विशाखी
8. मास पेशीय डायसट्रोफी

6.0 अध्ययन आदतें :–अध्ययन का अर्थ है– उन तथ्यों, विचारों,विषयों,विधियों, समस्याओं आदि का ज्ञान प्राप्त करना जिनसे विद्यार्थी या व्यक्ति अनभिज्ञ है।

आदतें एक सीखा हुआ कार्य या अर्जित व्यवहार है जो स्वतः होता है। ऐसा कार्य जो पहले कठिन लगता है वह सीखने के बाद सरल हो जाता है।

सृजनात्मकता :– सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के क्रियेटिविटी के पर्याय के रुप में प्रयुक्त होता है। इसके समानान्तर, उत्पादन शब्द का प्रयोग होता है। उत्पादकता में प्रोडक्टीविटी का बोध होता है। रघुवीर ने क्रियेटिव का अर्थ सृजन करना,उत्पन्न करना, सर्जित करना, बनाना कहा है।

समायोजन :– समायोजन शब्द का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द एडजस्टमेन्ट है। इसकी व्युत्पति जीव–विज्ञान के एडाप्सन शब्द से हुई है। नवजात शिशु का जन्म लेने के बाद यदि वातावरण के साथ समायोजित हो जाता है तो वह जीवित रहता है अन्यथा नहीं।

7.0 शोध के उद्देश्य :–

1. राजकीय विद्यालयों के दिव्यांग बालकों का अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययन करना।

2. गैर– राजकीय विद्यालयों के दिव्यांग बालकों का अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययन करना।

8.0 शोध अध्ययन की परिकल्पना :–

1. सीकर जिले में लिंग–भेद (बालक व बालिकाएँ) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर–राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. सीकर जिले में लिंग–भेद (बालक–बालिकाएँ) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालकों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर–राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के बालकों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. सीकर जिले में लिंग–भेद (बालक–बालिकाएँ) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
6. सीकर जिले के विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर–राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

9.0 अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि :–प्रस्तावित शोध में शोधकर्ता द्वारा निम्नवर्ती उपकरणों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन के मापन हेतु प्रयोग किये जाने वाले उपकरण निम्नलिखित हैः–

अध्ययन आदतों का उपकरण :– डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ
नेशनल सायकोलॉजिकल कॉरपोरेशन
यू.जी.–1 निर्मल हाईट्स, आगरा 282007 (भारत)

सृजनात्मकता :– डॉ. बाकर मेंहदी
नेशनल सायकोलॉजीकल कॉरपोरेशन
4/230, कचहरी घाट, आगरा– 282004 (भारत)

समायोजन :– डॉ. आर. पी. सिंह
ए. के. पी. सिन्हा
नेशनल सायकोलॉजिकल कॉरपोरेशन
यू.जी.–1 निर्मल हाईट्स, आगरा 282007 (भारत)

10.0 अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श :– प्रस्तावित शोध अध्ययन **सर्वेक्षण विधि** पर आधारित है जिसमें वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अतः सम्पूर्ण सीकर जिले के सीकर,लक्ष्मणगढ़,फतेहपुर,धोद,दांतारामगढ़,नीमका थाना तहसीलों के राजकीय व गैर–राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत दिव्यांग बालक बालिकाओं को ही लिय गया है। न्यादर्श में सीकर जिले के कक्षा नवमी एवं दसवीं में अध्ययनरत चयनित तहसीलों के दिव्यांग बालक बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है। इन बालक बालिकाओं का चयन राजकीय एवं गैर–राजकीय दोनों प्रकार के विद्यालयों में से किया गया है। शोध छात्र का प्रयास रहा है कि इस न्यादर्श में सीकर जिले के सभी चयनित तहसीलों के राजकीय व गैर–राजकीय विद्यालयों को सम्मिलित किया जा सकें।

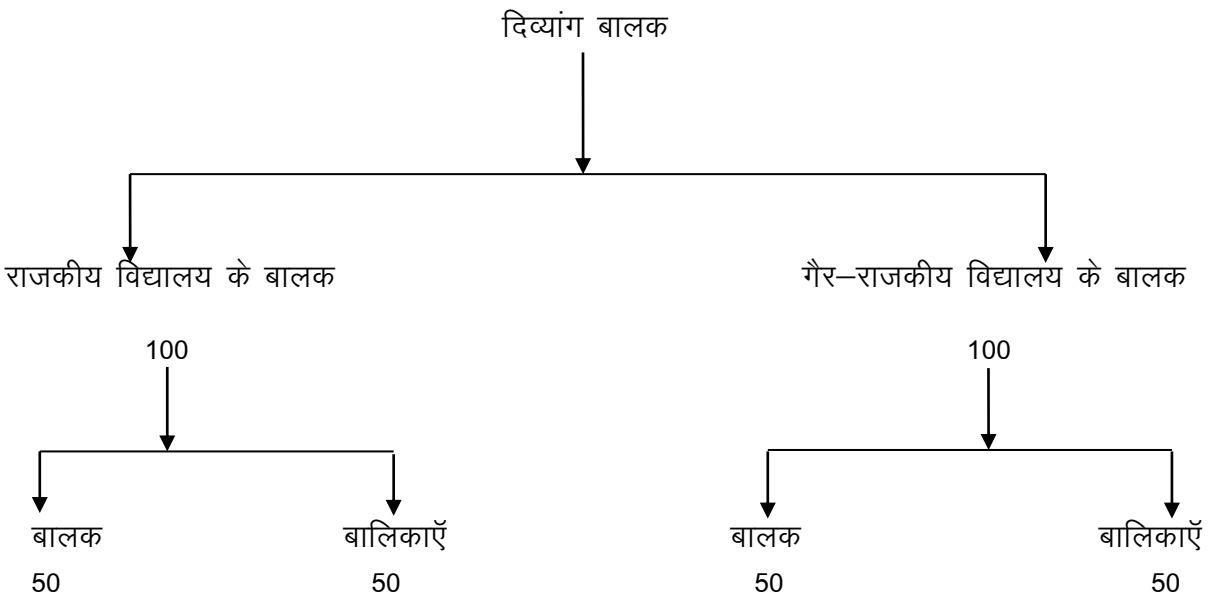

11.0 शोध के चर :–

1. स्वतंत्र चर :– दिव्यांग बालक बालिकाएँ
2. आश्रित चर :– अध्ययन आदत, सृजनात्मकता, समायोजन।

12.0 शोध का परिसीमांकन :–

1. प्रस्तावित शोध अध्ययन राजस्थान के सीकर जिले तक ही सीमित है।
2. न्यादर्श में केवल माध्यमिक स्तर के कक्षा नवमी एवं दसवीं के दिव्यांग बालक–बालिकाओं को लिया गया है।
3. अध्ययन में सीकर जिले के राजकीय व गैर–राजकीय दोनों प्रकार के विद्यालय को लिया गया है।
4. उन विद्यालयों का ही चयन किया गया है जहॉ दिव्यांग विद्यार्थी उपलब्ध है।

13.0 अध्ययन आदतें :–

सारणी संख्या –1

विद्यार्थी वर्ग	N	M	SD	t -test	Significance Level
राजकीय विद्यालय	100	31.94	5.03	7.021	सार्थक (0.05–0.01 तक)
निजी विद्यालय	100	30.08	6.16		

सार्थक स्तर = 0.05 सार्थक स्तर =0.01

प्रस्तुत सारणी संख्या एक से यह निष्कर्ष निष्पादित होता है कि राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के माध्यमान में सार्थक अंतर पाया जाता है। यह परिकल्पना 0.05 एवं 0.01 स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है।

क्योंकि t मान 7.021 का मान तालिका के t मान से उपर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। एवं यह निष्कर्ष में प्राप्त होता है कि समान राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों में अंतर है।

14.0 सृजनात्मकता :–

सारणी संख्या – 2

विद्यार्थी वर्ग	N	M	SD	t- test	Significance Level
राजकीय विद्यालय	100	16.28	2.29	0.583	सार्थक
निजी विद्यालय	100	18.80	2.73		

सार्थक स्तर = 0.05 सार्थक स्तर = 0.01

प्रस्तुत सारणी 2 से प्राप्त t प्राप्तांक 0.583 दोनों स्तरों पर 0.05 एवं 0.01 स्तर से सारणी के मान से कम है(DF=198) अतः यहा निष्कर्ष निकलता है कि राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यहॉ परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

15.0 समायोजन :–

सारणी संख्या – 3

विद्यार्थी वर्ग	N	M	SD	t- test	Significance Level
राजकीय विद्यालय	100	32.91	6.01	5.63	सार्थक
निजी विद्यालय	100	6.85	6.23		

सार्थक स्तर = 0.05 सार्थक स्तर = 0.01

प्रस्तुत सारणी 3 से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि t मान 5.63 (DF=198) पर सार्थक अंतर 0.05 एवं 0.01 के सारणी के t मान से बड़ा है। अतः यहॉ निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। (दोनों स्तर पर)

16.0शोध का निष्कर्ष :–

- सीकर जिले के विभिन्न विद्यालयों (राजकीय/निजी) के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में समानता नहीं पाई गई। माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थी वस्तुओं के नये एवं असाधारण प्रयोग करने, नये सम्बन्धों का पता लगाने व वस्तुओं का मनोरंजक एवं विचित्र बनाने में अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सृजनशील पाये गये।

- सीकर जिले के विभिन्न विद्यालयों (राजकीय/निजी) के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में समानता नही पाई गई। माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अच्छी आदते पाई गई। जैसे – पुस्तके पढ़ने, अनुशासन में रहना, समय पर विद्यालय आना आदि।
- सीकर जिले के विभिन्न विद्यालयों (राजकीय/निजी) के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन में समानता नहीं पाई गई। माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थी हर प्रकार के क्रिया–कलाप एवं साथी विद्यार्थियों के साथ समायोजित होने की क्षमता पायी जाती है।
- शोधार्थी को यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में अंतर है इसके लिए विद्यालय पर्यावरण,शिक्षक तथा विद्यालय के प्रकार स्वंय जिम्मेदार है।

17.0 संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. एकोफ आर. एल. 1953, सामाजिक शोध के प्रकारों, शिकागों, विश्वविद्यालय प्रेस
2. बी. शेखर 1989–92, राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान, बिकानेर, शिक्षा विभाग राजस्थान,
3. बसन्त बहादुर सिंह 2013, शिक्षा शास्त्रे, आगरा, उपकार प्रकाशन
4. बेस्ट जे. डब्लयू. 1950, शिक्षा में शोध कार्य,नई दिल्ली, प्रिन्टाइस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0
5. बेस्ट जे. डब्लयू. 1963, शिक्षा में शोध कार्य,नई दिल्ली, प्रिन्टाइस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0 हरीनारायण पालीवाल
6. भार्गव उ ा 1987, किशोर मनोविज्ञान, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
7. भटनागर आर. पी. 1955, शिक्षा में अनुसंधान एवं विश्ले ाण, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
8. भटनागर,कुमार,प्रभूदयाल शर्मा, 2008, ''शिक्षक–शिक्षा में शिक्षण एवं नवाचार'', लाडनूं, जैन विश्व भारती संस्थान
9. रायजादा,बी.एस., 2006,''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'', जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
10. व्यास जगदीशचन्द्र 1988,''क्रियात्मक अनुसंधान संप्रत्यय और प्रक्रिया'', उदयपुर, श्रेंया संस्थान प्रकाशन,
11. राजस्थान पत्रिका (अप्रेल 2016) ''निशक्त जनों को दिव्यांग कहेंगे''।
12. दैनिक भास्कर (अप्रेल 2016) ''निशक्त जनों को दिव्यांग कहेंगे''।
13. दैनिक नवज्योति (अप्रेल 2016) ''अब निशक्त जनो को कहेंगे दिव्यांग जन''।
14. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्श 21, अंक जनवरी –जून 2002
15. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्श 23, अंक जुलाई– दिसम्बर 2004
16. Buch M.B. 1972-78 Survey of Research in Education
17. Buch M.B. 1983-88 Survey of Research in Education
18. Estifence J.M. 1956 Educational Psychology the original nature of main Newyork.
19. Jain gopal Lal 2003 Research Methology, Mathod Tools and Tecniques, Mangal Deep Publising, Jaipur.
20. http:// www.indiacensus2011.org/National-Reports/I
21. http:// www.Narcissi.org s
22. http:// www.icevi.org./Publication/Education/June-03/artical24 html
23. http:// www.raj.shiksha.govt.in
24. http:// www.educationnrianet.com